छत्तीसगढ़ भारती

कक्षा–6

सत्र 2024–25

DIKSHA एप कैसे डाउनलोड करें?

विकल्प 1 : अपने मोबाइल ब्राउज़र पर diksha.gov.in/app टाइप करें।

विकल्प 2 : Google Play Store में DIKSHA NCTE ढूंढ़े एवं डाउनलोड बटन पर tap करें।

DIKSHA

मोबाइल पर QR कोड का उपयोग कर डिजिटल विषय वस्तु कैसे प्राप्त करें ?

DIKSHA App को लॉच करे → **App** की समस्त अनुमति को स्वीकार करें → उपयोगकर्ता **Profile** का चयन करें।

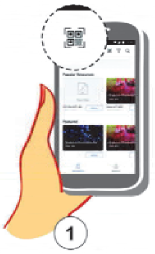

1 पाठ्यपुस्तक में QR Code को Scan करने के लिए मोबाइल में QR Code tap करें।

2 मोबाईल को QR Code पर केन्द्रित करें।

3 सफल Scan के पश्चात् QR Code से लिंक की गई सूची उपलब्ध होगी।

डेस्कटॉप पर QR Code का उपयोग कर डिजिटल विषय–वस्तु तक कैसे पहुँचे ?

1 QR Code के नीचे 6 अंक का Alpha Numeric Code दिया गया है।

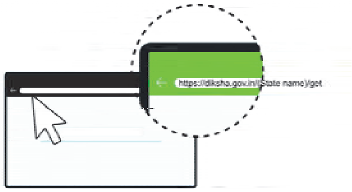

2 ब्राउज़र में diksha. gov.in/cg टाईप करें।

3 सर्च बार पर 6 डिजिट का QR CODE टाईप करें।

4 प्राप्त विषय–वस्तु की सूची से चाही गई विषय–वस्तु पर क्लिक करें।

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् छत्तीसगढ़, रायपुर

निःशुल्क वितरण हेतु

प्रकाशन वर्ष 2024

एस.सी.ई.आर.टी., छत्तीसगढ़, रायपुर

4XYKQK

सहयोग	**प्रो. रमाकान्त अग्निहोत्री** अजीम प्रेमजी फाउण्डेशन
समन्वयक	डॉ. विद्यावती चंद्राकर
संपादक	**डॉ. शिवराम शर्मा, डॉ. सी.एल. मिश्र ,** डॉ.विद्यावती चंद्राकर

लेखक – मंडल

हिन्दी	छत्तीसगढ़ी
डॉ. शिवराम शर्मा, डॉ. सी. एल. मिश्र **डॉ. भारती खुबालकर, श्रीमती उषा पवार** **श्री गजानंद प्रसाद देवांगन, श्रीमती अरुणा चौहान** **श्री विनय शरण सिंह,श्री दिनेश गौतम** डॉ.रचनादत्त, कार्तिकेय शर्मा, डॉ. विद्यावती चंद्राकर	डॉ. जीवन यदु, डॉ.पीसी लाल यादव, श्री विनय शरण सिंह डॉ. मांघी लाल यादव, श्री मंगत रवींद्र, श्री डुमन लाल ध्रुव, श्री पाठक परदेशी,श्री गणेश यदु,श्री कुबेर साहू, श्रीमती नम्रता सिंह, श्री निशिकांत त्रिपाठी, श्रीमती मैना अनंत

चित्रांकन	**समीर श्रीवास्तव**
आवरण पृष्ठ	**रेखराज चौरागड़े, रायपुर**
फोटोग्राफर	**एस.अहमद, रायपुर**
सहयोग	**आसिफ, भिलाई**

प्रकाशक

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् छत्तीसगढ़, रायपुर

मुद्रक

छत्तीसगढ़ पाठ्यपुस्तक निगम, रायपुर (छ.ग.)

मुद्रणालय

मुद्रित पुस्तकों की संख्या – ....

प्राक्कथन

1 नवम्बर 2000 को छत्तीसगढ़ के नए राज्य के रूप में अस्तित्व में आने से यह आवश्यक हो गया था कि राज्य की आवश्यकताओं एवं आकांक्षाओं को पूरा करने के लिए विद्यालयीन पाठ्यक्रम में उचित संशोधन किया जाए। पिछले दो वर्षों तक राज्य में यत्किंचित संशोधन के उपरान्त वे ही पाठ्यपुस्तकें प्रचलित रहीं जो राजीव गांधी शिक्षा मिशन मध्यप्रदेश ने तैयार कीं और मध्यप्रदेश पाठ्यपुस्तक निगम ने प्रकाशित कीं। राज्य के विद्यार्थियों के लिए राज्य की अपेक्षाओं के अनुरूप पाठ्यचर्या और पाठ्यपुस्तकों का निर्माण करना आवश्यक था। ये पुस्तकें ऐसी हों जिनमें राष्ट्रीय लक्ष्यों और उद्देश्यों के साथ-साथ राज्य की विशिष्टताओं, उसके कलात्मक और सांस्कृतिक धरोहर का परिचय विद्यार्थियों को मिल सके। अतः शासन ने निर्णय लिया कि वर्ष 2004-05 से प्रदेश के शालेय विद्यार्थियों के लिए पाठ्यचर्या और पाठ्यक्रम नए रूप में तैयार किए जाएँ। यह इसलिए भी आवश्यक था कि माध्यमिक शिक्षा मण्डल छत्तीसगढ़ का गठन हो चुका था और उसने कक्षा 9 वीं से 12 वीं तक के लिए पाठ्यचर्या और पाठ्यक्रम का निर्माण कर लिया था। इधर विद्यालयीन शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा निर्मित की गई और उसके आधार पर पाठ्यक्रमों का निर्माण भी किया गया। इस पाठ्यचर्या और पाठ्यक्रमों के विभिन्न उद्देश्यों में एक मुख्य उद्देश्य है पाठ्यसामग्री को अद्यतन बनाना और मूल्यपरक शिक्षा प्रदान करना। राज्य शासन ने छत्तीसगढ़ राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद् को पाठ्यचर्या एवं पाठ्यक्रम संशोधन एवं नव निर्माण का कार्य सौंपा है। तदनुसार परिषद् ने प्रदेश की परिस्थितियों, आकांक्षाओं और आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए सत्र 2004-2005 में दक्षता आधारित पाठ्यक्रम तैयार करने का कार्य आरंभ किया।

पाठ्यचर्या एवं पाठ्यक्रम निर्माण में सहयोग देने के लिए कुछ अशासकीय संस्थाओं की सहायता भी हमें मिली और इसके लिए आर्थिक सहायता यूनिसेफ ने प्रदान की। उसके लिए हम उन अशासकीय संस्थाओं और यूनिसेफ के अधिकारियों के आभारी हैं।

शासन के निर्णय पर राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् के तत्वावधान में नई पाठ्यचर्या और पाठ्यक्रम पर जुलाई 2003 से ही कार्य गोष्ठियाँ आयोजित होने लगीं थीं और चार कार्यगोष्ठियों में यह कार्य पूर्ण किया गया। इसके अनन्तर पाठ्यपुस्तकों का लेखन और संपादन कार्य प्रारंभ हुआ। शासन की सहमति से निर्णय यह भी लिया गया कि वर्ष 2004-05 के लिए कक्षा 1, 2 और 6 के पाठ्यक्रमानुसार पाठ्यपुस्तकें तैयार कराई जाएँ और एक वर्ष राज्य के दो सौ विद्यालयों, शिक्षकों, प्रधानाध्यापकों, निरीक्षकों एवं शिक्षा-विशेषज्ञों से प्राप्त सुझावों के आधार पर इनमें आवश्यक संशोधन करके वर्ष 2006-07 से संपूर्ण राज्य में इनका अध्यापन कराया जाए।

शिक्षा आजीवन चलने वाली सतत् और विकासशील प्रक्रिया है। ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में निरन्तर तेजी से हो रहे विस्फोट और नवीन शैक्षिक आवश्यकताओं तथा नवाचार के कारण नए पाठ्यक्रम और नई पुस्तकों का निर्माण आवश्यक हो जाता है।

भाषा की इस पुस्तक के लेखन में हमने निम्नलिखित बातों का विशेष रूप से ध्यान रखा है–

संकलन के पाठों का चयन करते समय विद्यार्थियों के बौद्धिक स्तर और भाषा का स्तर इन दो बातों पर विशेष रूप से बल दिया गया है। इस पुस्तक का उद्देश्य विद्यार्थियों को श्रेष्ठ साहित्य एवं साहित्य की विभिन्न विधाओं से परिचित कराना है। विद्यार्थियों की अभिरुचि को परिष्कृत करके उनको श्रेष्ठ साहित्य की ओर प्रेरित करना हमारा अभीष्ट रहा है।

इस पुस्तक में जिन विचारों और मानवीय मूल्यों पर अधिक बल दिया गया है उनमें से कुछ हैं– राष्ट्रीय एकता, पारस्परिक सद्भाव, सामाजिक सहयोग, श्रम का महत्व, समय–पालन, साहस, स्वास्थ्य, पर्यावरण संरक्षण, राष्ट्रीय एवं राज्यीय संस्कृति का ज्ञान, सभी धर्मों के प्रति आदर भाव आदि। इनके साथ ही प्रकृति–सौन्दर्य, राष्ट्रीय एकता, लौकिक नीति, वात्सल्य तथा कर्तव्य–भावना से परिपूर्ण कविताएँ इस संकलन में समाविष्ट हैं।

इस पुस्तक में हमने यह भी प्रयास किया है कि विद्यार्थियों से विषय–वस्तु को सही रूप में समझने के लिए अभ्यास अधिक कराए जाएँ। अभ्यास एक ऐसा प्रभावशाली साधन है जिससे पाठ को भली प्रकार समझा जा सकता है। अभ्यास के जरिए हम विद्यार्थियों की रचनात्मक शक्ति का विकास करना चाहते हैं। विषयवस्तु पर पूछे गए प्रश्न न केवल स्मरण के प्रश्न हैं बल्कि उनका उत्तर देने में विद्यार्थियों को अपनी बौद्धिक क्षमता का भी उपयोग करना पड़ेगा।

भाषा अध्ययन में व्याकरण का महत्वपूर्ण स्थान है, किंतु हमने इसे एक पृथक विषय न बनाकर पाठ पर आधारित एक आनुषंगिक विषय के रूप में पढ़ाने का प्रयास किया है। संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण आदि व्याकरण के अंगों की परिभाषाएँ, उनके भेद–उपभेद बताना तथा प्रत्येक के कुछ उदाहरण स्मरण कर लेने से ज्ञान का पर्याप्त उपयोग नहीं होता क्योंकि यह ज्ञान पाठ की सामग्री से असंबद्ध–सा रहता है। इसी कमी को दूर करने के लिए हमने इस पुस्तक में व्याकरण को पाठ्यसामग्री से संबद्ध किया है। भाषा तत्त्व में कुछ ऐसे प्रश्न भी समाविष्ट किए गए हैं जिनसे विद्यार्थियों को भाषा का प्रभावी प्रयोग करने में सहायता मिलेगी और वर्तनी, प्रयोग तथा वाक्य विन्यास संबंधी उनकी अशुद्धियाँ दूर हो सकेंगी।

पाठ्यसामग्री में विविधता और रोचकता बनाए रखने के लिए पुस्तक में साहित्य की अलग–अलग विधाओं, यथा कविता, कहानी, निबंध, प्रेरक–प्रसंग, चरित, आत्मकथा, संस्मरण, एकांकी, पत्र आदि सभी का समावेश किया गया है। अंत में योग्यता विस्तार शीर्षक से कुछ क्रियात्मक अभ्यास भी दिए गए हैं जिनसे विद्यार्थियों की सुनने, बोलने, पढ़ने और लिखने की योग्यताओं का विकास हो सकेगा।

इस पुस्तक में हिंदी साहित्य के जिन प्राचीन तथा वर्तमान कवियों, लेखकों की रचनाओं को समाविष्ट किया गया है, हम उनके तथा उनके उत्तराधिकारियों के कृतज्ञ हैं। हमने इस संकलन में छत्तीसगढ़ के कुछ प्रख्यात लेखकों–कवियों की रचनाएँ भी सम्मिलित की हैं। राज्य के कुछ अन्य प्रतिष्ठित साहित्यकारों की रचनाओं को कक्षा 7 और 8 की पाठ्यपुस्तकों में संकलित करने का हमारा निश्चय है। इस संबंध में हमारी सीमाएँ भी हैं जिन पर विचार करके राज्य के वे साहित्यकार हमें क्षमा करेंगे जिनकी रचनाएँ हम इस संकलन में नहीं रख पाए हैं।

संकलन के पाठों के चुनाव और अभ्यासों को तैयार करने में हमें दिल्ली विश्वविद्यालय के भाषा–विज्ञान विभाग के आचार्य प्रो. रमाकान्त अग्निहोत्री का विशेष रूप से मार्गदर्शन मिला है। हम उनके प्रति कृतज्ञ हैं। लेखक मंडल के सदस्यों ने जिस कर्मठता और लगन से इस संकलन को अंतिम रूप प्रदान किया है, इसके लिए वे बधाई के पात्र हैं।

राज्यस्तरीय पाठ्यपुस्तक स्थायी समिति के विद्वान सदस्यों ने इस पुस्तक का परीक्षण कर इसे अधिक प्रभावशाली बनाने के लिए संशोधन के कुछ सुझाव भी दिए हैं। उन सुझावों के अनुसार पाठ्यपुस्तक में संशोधन कर दिया गया है। अब विश्वास है कि विषयवस्तु और प्रस्तुतीकरण की दृष्टि से भारती कक्षा 6 के इस नवीन संस्करण का विद्यार्थियों और शिक्षकों द्वारा स्वागत किया जाएगा।

शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009 बच्चों को गुणवत्तायुक्त शिक्षा देने पर जोर देता है। एन.सी.ई.आर.टी.,नई दिल्ली द्वारा कक्षा 1–8 तक के बच्चों हेतु कक्षावार, विषयवार अधिगम प्रतिफलों का निर्माण कर सुझावात्मक शिक्षण प्रक्रियाओं का उल्लेख किया गया है। जिससे बच्चों के सर्वांगीण विकास के लक्ष्य को प्राप्त किया जा सकेगा। पुस्तकों में समयानुसार संशोधन तथा परिवर्धन एक निरंतर प्रक्रिया है। अतः सत्र 2018–19 हेतु पुस्तकों को समसामायिक तथा प्रासंगिक बनाया गया है। जिससे बच्चों को वांछित उपलब्धि प्राप्त करने के अधिक अवसर उपलब्ध होंगे। आशा है कि पुस्तकें शिक्षक साथियों तथा बच्चों को लक्ष्य तक पहुँचने में मददगार होंगी।

स्कूल शिक्षा विभाग एवं राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, छ.ग. द्वारा शिक्षकों एवं विद्यार्थियों में दक्षता संवर्धन हेतु अतिरिक्त पाठ्य संसाधन उपलब्ध कराने की दृष्टि से **Energized Text Books** एक अभिनव प्रयास है, जिसे ऑन लाईन एवं ऑफ लाईन (डाउनलोड करने के उपरांत) उपयोग किया जा सकता है। **ETBs** का प्रमुख उद्देश्य पाठ्यवस्तु के अतिरिक्त ऑडियो–वीडियो, एनीमेशन फॉरमेट में अधिगम सामग्री, संबंधित अभ्यास, प्रश्न एवं शिक्षकों के लिए संदर्भ सामग्री प्रदान करना है।

प्रस्तुत पुस्तक को और अधिक उपयोगी बनाने के लिए विद्यार्थियों, अध्यापकों, शिक्षाविदों द्वारा भेजे गए सुझावों का हम सदैव स्वागत करेंगे।

संचालक
राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
छत्तीसगढ़, रायपुर

शिक्षकों से आग्रह

छत्तीसगढ़ राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् के मार्गदर्शन में बनी कक्षा छठवीं की भाषा की पुस्तक 'भारती' का छठवाँ संस्करण आपके सामने है। पहले और दूसरे संस्करण में क्षेत्र – परीक्षण में विद्यार्थियों, शिक्षकों और राज्यस्तरीय पाठ्यपुस्तक स्थायी समिति के सदस्यों के सुझावों के अनुसार पाठ्यपुस्तक में आवश्यक संशोधन कर दिए गए हैं। बच्चा सीखने की क्षमता लेकर स्कूल आता है। 11–12 की आयु में तो यह क्षमता चरम सीमा पर रहती है। बच्चे अपने आस–पास की दुनिया, संसार, ब्रह्मांड आदि के बारे में कुछ और समझना चाहते हैं। आवश्यक यह नहीं है कि बच्चों को सभी के संबंध में जानकारी करवाई जाए। आवश्यकता इस बात की है कि उनकी समझने की शक्ति का भरपूर विकास हो। बच्चे पढ़कर स्वयं समझ सकें व सुनी व पढ़ी बात की सार्थक विवेचना कर सकें। इस प्रकार उनकी बोलने व लिखने की क्षमता का भी विकास होना चाहिए। शिक्षण के क्षेत्र में पाठ्यपुस्तकें, सहायक सामग्री तथा अन्य शैक्षिक गतिविधि कोई उतना सुफल नहीं दे सकतीं जितना एक सुयोग्य शिक्षक। यह शिक्षक ही है जो जटिल, नीरस विषय–वस्तु को सुगम और सरस बना देता है। हमें विश्वास है कि प्रस्तुत पुस्तक के शिक्षण में राज्य के सभी संबंधित शिक्षक अपनी इस प्रतिभा का सही उपयोग करेंगे।

प्रत्येक शिक्षक अपने ढंग से शिक्षण–पद्धति अपनाता है। शिक्षण की उसकी अपनी शैली होती है। फिर भी हम अपेक्षा करते हैं कि वे हमारे इन विनम्र सुझावों पर विचार करेंगे और यदि वे इन सुझावों को उपयोगी समझें तो इन्हें अपनाएँगे।

इस पुस्तक को स्तरानुकूल और रोचक बनाने में राज्य के अनेक शिक्षकों, विद्वानों, पाठकों, शिक्षाविदों और राज्यस्तरीय पाठ्यपुस्तक स्थायी समिति के सदस्यों का योगदान है। इन सभी के परामर्श से पाठ्यपुस्तक में जीवन के विविध क्षेत्रों से जुड़े बच्चों की रुचि पर आधारित पाठ संकलित किए गए हैं। इन पाठों को कविता, निबंध, चरित्र, एकांकी, पत्र, जीवनी आदि अनेक विधाओं से सँजोया गया है। इन पाठों के आधार पर कक्षा में विद्यार्थियों के बीच संवाद, समूहचर्चा, अभिनय, पूरी कक्षा के साथ विचार–विमर्श आदि क्रियाओं का आयोजन किया जा सकता है। आपको इन क्रियाओं में प्रत्येक बच्चे की भागीदारी सुनिश्चित करनी है। साथ ही विद्यार्थियों में धैर्यपूर्वक सुनने, समझने तथा स्वाभाविक ढंग से बोलकर अपनी बात कहने की दक्षताओं का विकास भी करना है।

यह भी आवश्यक है कि बच्चे ढंग से बातचीत करना सीख जाएँ– कब बोलना है और कब कहाँ, किस प्रकार के संदर्भ में किस प्रकार की भाषा लिखी या बोली जाएगी। जिस शैली का प्रयोग आप अपने दोस्त को पत्र लिखने में करते हैं, उसी शैली में आप एक निबंध नहीं लिख सकते। वाक्य–संरचना से ऊपर अनुच्छेद का अपना स्वरूप और चरित्र होता है। ऐसे कई नियम हैं जो एक अनुच्छेद में वाक्यों को एक दूसरे से बाँधते हैं। एक अनुच्छेद से 'और', 'वह', 'उस', 'या', 'क्योंकि' जैसे शब्दों को हटाकर देखा जाए तो आपकी समझ में आएगा कि अनुच्छेद को कैसे परस्पर बाँधते हैं। भाषा की इस विशेषता की तरफ भी बच्चों को जागरूक करना आवश्यक है।

अपने शिक्षण को और अधिक कारगर बनाने के लिए आप निम्नलिखित सोपानों को अपना सकते हैं–

1. पाठ की तैयारी – किसी पाठ को एकदम पढ़ाना प्रारंभ करने से पूर्व यह अधिक उचित है कि पृष्ठभूमि का निर्माण करें। इससे विद्यार्थियों के पूर्व ज्ञान का भी पता चल जाता है और उन्हें पाठ को समझने में सहायता भी मिल जाती है। पाठ्यवस्तु प्रारम्भ करने के पूर्व विद्यार्थियों से ऐसे प्रश्न पूछिए जिनके उत्तरों से आपको उनके पूर्व ज्ञान का पता लगे। उदाहरण के लिए– 'सहृदयता और सहनशीलता' शीर्षक पाठ पढ़ाने के पूर्व देशरत्न डॉ. राजेन्द्र प्रसाद जी के संबंध में प्रश्न पूछना चाहिए। साथ ही उन्हें क्रांतिकारियों या प्रथम राष्ट्रपति जी के संबंध में आवश्यक जानकारी भी देनी चाहिए।

कविता के पाठ पढ़ाने के संबंध में यह बात ध्यान में रखनी चाहिए कि इसे पढ़ाने का ढंग कहानी, निबंध, चरित आदि

के पाठों से बिल्कुल भिन्न है । कविता पढ़ाने का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों को सौंदर्य–बोध और रसानुभूति कराना है । विद्यार्थी कविता पढ़कर आनंदित हों; साथ ही देश, प्रकृति, पशु–पक्षियों, उपेक्षित मानवों आदि के प्रति उनके मन में अनुराग पैदा हो ।

2. नवीन शब्द परिचय – प्रायः सभी पाठों में कुछ–न–कुछ नवीन शब्दों का प्रयोग होता ही है। भाषा–शिक्षण का एक उद्देश्य यह भी है कि प्रत्येक कक्षा में विद्यार्थियों को कुछ नवीन शब्द अवश्य पढ़ाए जाएँ। हम यह कब कहेंगे कि बच्चों ने कोई नया शब्द सीख लिया है। इसमें कोई शक नहीं है कि बच्चे को शब्द का सही उच्चारण आना चाहिए और उसे उस शब्द से मिलते–जुलते शब्दों के बारे में भी जागरूक रहना चाहिए, लेकिन सबसे महत्वपूर्ण बात है कि बच्चा एक शब्द का अलग–अलग संदर्भों में सार्थक प्रयोग कर सके।

3. वाचन – विद्यार्थियों द्वारा सस्वर वाचन करने के पूर्व यह आवश्यक है कि आप एक अनुच्छेद का आदर्श वाचन करें, फिर विद्यार्थियों से उसका अनुकरण वाचन कराएँ। इससे विद्यार्थियों को शब्दों के सही उच्चारण करने, बलाघात, विराम चिह्नों के अनुसार पढ़ने में सहायता मिलेगी। कौन कितनी शीघ्रता से वाचन करता है, यह जाँच करना अच्छे वाचन का लक्षण नहीं माना जा सकता। कौन विराम चिह्नों का पालन करते हुए, बलाघात का अनुसरण करते हुए, शुद्ध उच्चारण के साथ पठन करता है, यह आदर्श वाचन का लक्षण है। वाचन कराते समय इस बात का विशेष रूप से ध्यान रखें कि वाचन करने का अवसर समान रूप से सभी विद्यार्थियों को मिले। जो विद्यार्थी वाचन में पिछड़े हैं, उन्हें अन्य विद्यार्थियों के समकक्ष लाने का प्रयास करें।

4.भाषा संबंधी दक्षताओं का विकास– पाठ की विषय वस्तु को समझने के साथ–साथ यह भी अपेक्षित है कि विद्यार्थियों में भाषा संबंधी योग्यताओं का निरंतर विकास होता रहे। साधारण रूप से पढ़ना के अन्तर्गत अर्थग्रहण और शब्द–बोध संबंधी कुशलताएँ होती हैं। पाठ्यपुस्तक के प्रत्येक पाठ के अन्त में इन दक्षताओं के विकास के लिए अभ्यास दिए गए हैं। आप ऐसे ही कुछ अन्य अभ्यास देकर उनकी दक्षता को विकसित कर सकते हैं।

5.योग्यता विस्तार के क्रियाकलाप – भाषा ज्ञान एकांगी न रहे, इसके लिए आवश्यक है कि भाषायी योग्यताओं के साथ अन्य विषयों से उसका संबंध स्थापित किया जाए। ऐसा संबंध स्थापित करने के लिए अभ्यास के अंत में योग्यता विस्तार शीर्षक में विद्यार्थियों को कुछ करने के लिए क्रियाकलाप सुझाए गए हैं। आपको यह देखना है कि ये क्रियाकलाप अनिवार्य रूप से प्रत्येक विद्यार्थी करे। इन क्रियाकलापों से विद्यार्थियों का रचनात्मक और सृजनात्मक विकास होगा। उनमें कला और लेखन संबंधी जागरुकता आएगी। समय–समय पर कक्षा में वाद विवाद प्रतियोगिता, अंत्याक्षरी प्रतियोगिता, चित्र निर्माण की प्रतियोगिता, भाषण प्रतियोगिता, पत्र–पत्रिकाओं से सामग्री एकत्र करना, ऐतिहासिक स्थलों का भ्रमण करके उनके संबंध में लेख लिखना आदि क्रियाकलापों से विद्यार्थियों के भाषायी कौशल में अभिवृद्धि होगी।

आप सबको अध्यापन करने का लंबा अनुभव है। आपके इस लंबे अनुभव से निःसंदेह विद्यार्थी लाभान्वित होते हैं। हमारे बताए कुछ सुझावों पर आप अमल करें – हो सकता है आपकी शिक्षणकला में इससे कुछ इज़ाफा हो। यदि ऐसा हुआ तो हम अपने प्रयास को सार्थक समझेंगे।

संचालक
राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
छत्तीसगढ़, रायपुर

214SSU

अनुक्रमणिका

क्र.	पाठ	विधा	रचयिता	पृष्ठ
1	अभियान गीत	कविता	डॉ. हरिवंशराय 'बच्चन'	01
2	एक टोकरी भर मिट्टी	कहानी	श्री माधवराव सप्रे	05
3	हेलन केलर	गद्यविधा	लेखक मंडल	10
4	दूँगी फूल कनेर के	कविता	श्री गंगाप्रसाद	15
5	बरखा आथे	कविता	लाला जगदलपुरी	20
6	सफेद गुड़	कहानी	सर्वेश्वर दयाल सक्सेना	24
7	समय नियोजन	निबंध	श्री समर बहादुर सिंह	28
8	मेरा नया बचपन	कविता	श्रीमती सुभद्रा कुमारी चौहान	32
9	दू ठन नान्हे कहानी	कहानियाँ	डॉ. पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी	36
10	हम पंछी उन्मुक्त गगन के	कविता	डॉ. शिवमंगल सिंह 'सुमन'	40
11	शहीद की माँ	एकांकी	श्री योगेशचंद्र शर्मा	43
12	सर्वधर्म समभाव	एकांकी	डॉ. कृष्णगोपाल रस्तोगी	50
13	आलसीराम	कहानी	श्री नारायण लाल परमार	55
14	नाचा के पुरखा–दाऊ मंदराजी	जीवन वृत्त	लेखक मंडल	59
15	सरलता और सहृदयता	कहानी	श्री एस. के. दत्त	63
16	चचा छक्कन ने केले खरीदे	कहानी	श्री इम्तियाज़ अली	69
17	नीति के दोहे	दोहे	तुलसी/रहीम/कबीर	76
18	हमर कतका सुंदर गाँव	कविता	श्री प्यारेलाल गुप्त	81
19	हार की जीत	कहानी	श्री सुदर्शन	84
20	हाना	लोक साहित्य	लेखक मंडल	91
21	छत्तीसगढ़ का दर्शन	निबंध	लेखक मंडल	96

CMYK

सीखने के प्रतिफल

सीखने–सिखाने की प्रक्रिया	सीखने की संप्राप्ति (Learning Outcomes)
सभी शिक्षार्थियों (भिन्न रूप से सक्षम बच्चों सहित) को व्यक्तिगत, सामूहिक रूप से कार्य करने के अवसर और प्रोत्साहन दिया जाए ताकि उन्हें–	बच्चे –
• अपनी भाषा में बातचीत तथा चर्चा करने के अवसर हों।	LH601. विभिन्न प्रकार की ध्वनियों (जैसे– बारिश, हवा, रेल, बस, फेरीवाला आदि) को सुनने के अनुभव, किसी वस्तु के स्वाद आदि के अनुभव को अपने ढंग से मौखिक/सांकेतिक भाषा में प्रस्तुत करते हैं।
• प्रयोग की जाने वाली भाषा की बारीकियों पर चर्चा के अवसर हों।	LH602. सुनी, देखी गई बातों, जैसे– स्थानीय सामाजिक घटनाओं, कार्यक्रमों और गतिविधियों पर बेझिझक बात करते हैं और प्रश्न करते हैं।
• सक्रिय और जागरूक बनाने वाली रचनाएँ, अखबार, पत्रिकाएँ, फिल्म और ऑडियो–वीडियो सामग्री को देखने, सुनने, पढ़ने, लिखने और चर्चा करने के अवसर उपलब्ध हों।	LH603. देखी, सुनी रचनाओं/घटनाओं/ मुद्दों पर बातचीत को अपने ढंग से आगे बढ़ाते हैं, जैसे– किसी कहानी को आगे बढ़ाना। LH604. रेडियो, टी.वी., अखबार, इंटरनेट में देखी/सुनी गई खबरों को अपने शब्दों में कहते हैं।
• समूह में कार्य करने और एक–दूसरे के कार्यों पर चर्चा करने, राय लेने–देने, प्रश्न करने की स्वतंत्रता हो।	LH605. विभिन्न अवसरों/संदभों में कही जा रही दूसरों की बातों को अपने ढंग से बताते हैं, जैसे–आँखों से न देख पाने वाले साथी का यात्रा– अनुभव।
• हिंदी के साथ–साथ अपनी भाषा की सामग्री पढ़ने–लिखने की सुविधा (ब्रेल/सांकेतिक रूप में भी) और उन पर बातचीत की आजादी हो।	LH606. अपने परिवेश में मौजूद लोककथाओं और लोकगीतों के बारे में जानते हुए चर्चा करते हैं। LH607. अपने से भिन्न भाषा, खान–पान, रहन–सहन संबंधी विविधताओं पर बातचीत करते हैं।
• अपने परिवेश, समय और समाज से संबंधित रचनाओं को पढ़ने और उन पर चर्चा करने के अवसर हों	LH608. सरसरी तौर पर किसी पाठ्यवस्तु को पढ़कर उसकी विषयवस्तु का अनुमान लगाते हैं।
• अपनी भाषा गढ़ते हुए लिखने संबंधी गतिविधियाँ आयोजित हों, जैसे–शब्द खेल।	LH609. किसी पाठ्यवस्तु की बारीकी से जाँच करते हुए उसमें किसी विशेष बिंदु को खोजते हैं, अनुमान लगाते हैं, निष्कर्ष निकालते हैं।
• हिंदी भाषा में संदर्भ के अनुसार भाषा विश्लेषण	LH610. हिंदी भाषा में विभिन्न प्रकार की सामग्री (समाचार, पत्र–पत्रिका, कहानी, जानकारीपरक सामग्री, इंटरनेट पर प्रकाशित होने वाली सामग्री आदि) को समझकर

(व्याकरण, वाक्य संरचना, विराम चिह्न आदि) करने के अवसर हों। • कल्पनाशीलता और सृजनशीलता को विकसित करने वाली गतिविधियों, जैसे– अभिनय, रोल–प्ले, कविता, पाठ, सृजनात्मक लेखन, विभिन्न स्थितियों में संवाद आदि के आयोजन हों और उनकी तैयारी से संबधित स्क्रिप्ट, लेखन और रिपोर्ट लेखन के अवसर हों। • साहित्य और साहित्यिक तत्वों की समझ बढ़ाने के अवसर हों। • शब्दकोश का प्रयोग करने के लिए प्रोत्साहन एवं सुलभ परिवेश हो। • सांस्कृतिक महत्व के अवसरों पर अवसरानुकूल लोकगीतों का संग्रह करने, उनकी गीतमय प्रस्तुति देने के अवसर हों।	पढ़ते हैं और उसमें अपनी पसंद–नापसंद, राय, टिप्पणी देते हैं। LH611. भाषा की बारीकियों/व्यवस्था/ढंग पर ध्यान देते हुए उसकी सराहना करते हैं, जैसे–कविता में लय–तुक, वर्ण–आवृत्ति (छंद) तथा कहानी, निबंध में मुहावरे, लोकक्ति आदि। LH612. विभिन्न विधाओं में लिखी गई साहित्यिक सामग्री को उपयुक्त उतार–चढ़ाव और सही गति के साथ पढ़ते हैं। LH613. हिंदी भाषा में विविध प्रकार की रचनाओं को पढ़ते हैं। LH614. नए शब्दों के प्रति जिज्ञासा व्यक्त करते हैं और उनके अर्थ समझने के लिए शब्दकोश का प्रयोग करते हैं। LH615. विविध कलाओं; जैसे– हस्तकला, वास्तुकला, खेती–बाड़ी, नृत्यकला आदि से जुड़ी सामग्री में प्रयुक्त भाषा के प्रति जिज्ञासा व्यक्त करते हुए उनकी सराहना करते हैं। LH616. दूसरों के द्वारा अभिव्यक्त अनुभवों को जरूरत के अनुसार लिखना; जैसे सार्वजनिक स्थानों (जैसे–चौराहों नलों, बस अड्डे आदि) पर सुनी गई बातों को लिखना। LH617. हिंदी भाषा में विभिन्न प्रकार की सामग्री (समाचार, पत्र–पत्रिका, कहानी, जानकारी परक सामग्री, इंटरनेट पर प्रकाशित होने वाली सामग्री आदि) को समझकर–पढ़ते हैं और उसमें अपनी पसंद–नापसंद, टिप्पणी को लिखित या ब्रेल भाषा में व्यक्त करते हैं। LH618. विभिन्न विषयों, उद्देश्यों के लिए उपयुक्त विराम–चिह्नों का उपयोग करते हुए लिखते हैं। LH619. विभिन्न अवसरों/संदर्भों में कही जा रही दूसरों की बातों को अपने ढंग से लिखते हैं। LH620. विभिन्न संदर्भों में विभिन्न उद्देश्यों के लिए लिखते समय शब्दों, वाक्य संरचनाओं, मुहावरे आदि का उचित प्रयोग करते हैं।

विषय–सूची (Contents)

अध्याय	पाठ का नाम	LOs
1	अभिमान गीत	LH608,LH609,LH611,LH612,LH613,LH616
2	एक टोकरी भर मिट्‌टी	LH608,LH611,LH612,LH613,LH614,LH618,LH620
3	हेलन केलर	LH605,LH608,LH609,LH612,LH614,LH617,LH620
4	दूँगी फूल कनेर के	LH608,LH611,LH612,LH613
5	बरखा आथे	LH601,LH607,LH608,LH611,LH612,LH613
6	सफेद गुड़	LH602,LH611,LH612,LH613,LH614,LH618,LH620
7	समय नियोजन	LH608,LH611,LH613,LH614,LH618,LH619,LH620
8	मेरा नया बचपन	LH608,LH611,LH612,LH613,LH614,LH616,LH619
9	दू ठन नान्हे कहानी	LH601,LH607,LH608,LH612,LH614,LH618,LH620
10	हम पंछी उन्मुक्त गगन के	LH601,LH608,LH609,LH611,LH612,LH613,LH614
11	शहीद की माँ	LH604,LH608,LH611,LH612,LH613,LH614,LH620
12	सर्वधर्म समभाव	LH607,LH608,LH611,LH612,LH613,LH614,LH620
13	आलसीराम	LH603,LH608,LH611,LH612,LH613,LH604,LH615, LH618
14	नाचा के पुरखा–दाऊ मंदराजी	LH603,LH606,LH608,LH612,LH614,LH615,LH618, LH618,LH620
15	सरलता और सहृदयता	LH608,LH611,LH612,LH613,LH614,LH618,LH619, LH620
16	चचा छक्कन ने केले खरीदे	LH611,LH612,LH613,LH614,LH618,LH620
17	नीति के दोहे	LH608,LH611,LH612,LH613,LH614
18	हमर कतका सुंदर गाँव	LH606,LH607,LH608,LH611,LH612,LH619,LH620
19	हार की जीत	LH608,LH611,LH612,LH613,LH614,LH618,LH620
20	हाना	LH606,LH607,LH608,LH611,LH612,LH613, LH614
21	छत्तीसगढ़ का दर्शन	LH604,LH607,LH608,LH611,LH612,LH613,LH620

उदाहरणार्थ रूब्रिक्स

Chapter	Sub Topic	Level 1	Level 2	Level 3	Level 4
After the lesson, students will be able to : पाठ के बाद, विद्यार्थी कर सकेंगेः–		**remember, recall, list, locate, label, recite** याद करना, स्मरण करना, सूचीबद्ध करना, खोजना लेबल करना, वर्णन करना	**understand, explain, illustrate, summaries, match** समझना, व्याख्या करना, संक्षेप में लिखना, उदाहरण देना, मेल करना	**apply, organize, use, solve, prove, draw** प्रयोग करना, व्यवस्थित करना, उपयोग करना, हल करना, साबित करना, चित्रण करना	**evaluate, hypothesize, analyze, compare, create, categories** मूल्यांकन करना, परिकल्पना करना, विश्लेषण करना, वर्गीकरण करना
अध्याय–1 अभियान गीत	शब्दार्थ–पयार्यवाची, भावार्थ/व्याख्या, वाचन, योजक चिह्न, का वाक्य में प्रयोग करना, राष्ट्रीय चिह्न, पशु, पक्षी, राजकीय धरोहर के नाम पड़ोसी (निकट) देशों की जानकारी प्रश्नोत्तर	कविता कंठस्थ (याद) करना, शब्दार्थ, पर्यायवाची	सप्रसंग व्याख्या करना। देशप्रेम को संक्षेप में बताना। अभ्यास के प्रश्नों को हल करना।	देश प्रेम और भावना देश भक्ति साबित करने के लिए पेड़ पौधो का संरक्षण, यातायात के नियमों का पालन, घर के आस–पास की सफाई, गाँव, शहर देश की सफाई। किन्हीं महापुरूष राष्ट्रीय पशु–पक्षी चिह्न आदि का चित्र बनाना और उनके बारे में लिखना।	• देश भक्ति से संबंधित चार लाईन की छोटी सी कविता लिखना। • यदि आप देश की सेवा करना चाहते हैं तो क्या करेंगे? (सरपंच, शिक्षक, डॉक्टर, सैनिक आदि साधारण व्यक्ति बनकर भी परिवेश से संबंधित उत्तम कार्य कर सकते हैं)।